International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 04, No. 01(I), January - March, 2022, pp.109-114

शिक्षित कामकाजी और श्रमिक महिलाओं के बच्चों की बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

विपिन कुमार वशिष्ठ*

प्रस्तावना

सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर अब तक, पाषाण काल से स्पूतनिक युग तक नारी, नर के जीवन का पोषण एवं उन्नयन करती रही हैं। आज तक अपनी ममता, वात्सल्य, त्याग, करूणा, कोमलता एवं मधुरता से पुरूष की कठोरता एवं रूक्षता को कम कर जीवन में एक स्निग्ध, अणस्त्र प्रेमधारा बहाने में अपूर्ण योग दिया हैं यह सत्य हैं कि संघर्ष पुरूष की जीवन प्रेरणा शक्ति का प्रमाण रहा हैं, किन्तु विश्व का सामाजिक इतिहास बतलाता हैं कि पुरूष ने प्रगति पथ पर अग्रसर होने के लिए किसी न किसी अंश में माता, बहिन, पत्नी, प्रेयसी आदि से किसी न किसी प्रकार की प्रेरणा अवश्य प्राप्त की है।

आंचल मे ं दूध और आंखों मे ं पानी लिये त्यागमयी नारी सामाजिक व्यवस्था का अनिवार्य अंग रही है और यह स्पष्ट है कि हमारी आदिम कालीन गृहस्थी का शिलान्यास नारी की कोमलता के कर कमलों द्वारा ही हुआ होगा, पुरूष की कठोरता की क्रेन द्वारा नही। महादेवी जी के शब्दो ं में पुरूष को यदि ऐसे वृक्ष की उपमा दी जाये, जा ` अपने चारो ं ओर के छाटे `–छोटे पौधों का जीवन रस चूस–चूसकर आकाश की ओर बढ़ता जाता है तो स्त्री को ऐसी लता कहना होगा जो पृथ्वी से बहुत से अंकुरो को पनपाती हुई उस वृक्ष को विशालता को चारो से ढक लेती है प्रकृति ने केवल उसके शरीर को अधिक सुकुमार नही बनाया, वरन्, उसे मनुष्य की जननी का पद देकर उसके हदय मे ं अधिक सेवेदना, आंखों में अधिक आर्द्रता तथा स्वभाव में अधिक कामे लता भर दी। नेपोलियन बोनापार्ट ने नारी कह महत्ता को बताते हुए कहा था कि – **"मुझे एक योग्य माता दे दो मैं तुमको एक योग्य राष्ट्र दूंगा।"**

शोध अध्ययन के उद्देश्य

"उद्देश्यों के अभाव में अध्यापक उस नाविक के समान हैं , जो अपनी मंजिल नहीं जानता और विद्यार्थी उस पतवारविहीन नौका के समान हैं जो लहरों के थपेड़े खाकर किसी भी तट पर जा लगेगी।" उद्देश्य की स्पष्टता शोध को स्पष्ट एवं सरल बना देती हैं। उद्देश्य किसी भी कार्य का अन्तिम बिन्दु हैं। जहाँ तक पहुंचने का सतर्क प्रयास किया जाता हैं।

अतः शोध अध्ययन में शोध के उद्देश्य निर्धारित करने आवश्यक होते हैं।

बी. गुड़ के अनुसार – "उद्देश्य पूर्व–निर्धारित साध्य होता हैं जो किसी कार्य या क्रिया का मार्गदर्शन करता हैं।"

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं :–

- शिक्षित कामकाजी महिलाओं एवं श्रमिक महिलाओं के बच्चां ` के व्यक्तित्व का अध्ययन करना।
- शिक्षित कामकाजी महिलाओ ं एवं श्रमिक महिलाओं के बच्चों की बुद्धि का अध्ययन करना।
- शिक्षित कामकाजी महिलाओं के बच्चों की बुद्धि एवं व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- श्रमिक महिलाओ ं के बच्चों की बुद्धि एवं व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन।
- शिक्षित कामकाजी महिलाओं एवं श्रमिक महिलाओं के बच्चों के व्यक्तित्व एवं बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

[6] शोधार्थी, लॉर्डस विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान।

शोध अध्ययन की आवश्यकता

बालक की प्रथम गुरू मां होती है उसी के सान्निध्य वात्सल्य को पाकर वह अपना सर्वांगीण विकास करता है। मॉ का ममतामयी आचरण बच्चे को सुकोमल तथा वज्र के समान कठोर दोनों प्रकार बनाने में सक्षम है जिसके अनेक उदाहरणों को पुस्तकों में लिखा देखा गया हैं, यानि महिलायें जैसे चाहे अपने बच्चे का पालन–पोषण कर सकती है।

हमारे देश में अधिकांश महिलायें अशिक्षित है तथा विभिन्न प्रकार के कार्य करके जीवन यापन करती है तथा कुछ महिलायें शिक्षित है जो कार्य कर अपना व अपने बच्चों का जीवन यापन चला रही है। यहॉ इस बात के अध्ययन की आवश्यकता है कि यदि महिलायें श्रमिक है तो उनके बच्चों की बुद्धि एवं व्यक्तित्व कैसा होगा और यदि शिक्षित कामकाजी महिलायें है तो उनके बच्चों की बुद्धि एवं व्यक्तित्व कैसा होगा समस्या की पहचान करना सबसे कठिन कार्य है परन्तु फिर भी अनुसंधान एक सोद्देश्य प्रक्रिया है, जिसके द्वारा मानव ज्ञान में वृद्धि की जाती है। क्या वास्तव में बुद्धिलब्धि एवं व्यक्तित्व में कुछ अलग पाया जाता है इन परिवर्तनों का पस्थिय प्राप्त करना परमावश्यक हैं क्योंकि बच्चे देश का भविष्य तथा अपने परिवार के सहयोगी है। चूंकि अन्य क्षेत्रों में बच्चों की बुद्धि एवं व्यक्तित्व पर अनेक परीक्षण हुए है परन्तु शिक्षित कामकाजी एवं श्रमिक महिलाओं के बच्चों के इस प्रकार के परीक्षण बहुत ही कम हुए है अतः शोधकर्त्री को शिक्षित कामकाजी एवं श्रमिक महिलाओं के बच्चों की बुद्धि एवं व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन करने की आवश्यकता महसूस हुई।

शोध अध्ययन का औचित्य

- संदर्भ साहित्य के अवलोकन द्वारा अनुसंधान के जिन विषयों पर पहले शोध हो चुका हैं। उसकी पुनरावृत्ति होने से बचा जा सकता हैं।
- शोध से सम्बन्धित वर्तमान ज्ञान का पता लगाना शोध में आगे बढ़ने का प्रथम सोपान हैं। यह सुविधा संदर्भ साहित्य ही प्रदान करते हैं।
- पूर्व साहित्य में दिये गये सुझावों से कई नये विचारों का प्रादुर्भाव होता हैं। जिससे अनुसंधानकर्ता को अपने शोध में सहायता मिलती हैं।
- संदर्भ साहित्य के अध्ययन से पूर्व शोध अध्ययनों में कोई कमी रह गयी हो तो उसे सुधारा जा सकता हैं।
- संदर्भ साहित्य के अध्ययन से नवीन समस्याओं पर भी ध्यान जाता हैं।

शोध अध्ययन की सीमाएं

समाज में महिलाओं का क्षेत्र बहुत बड़ा हैं परन्तु इस शोध की समयावधि को ध्यान में रखते हुए इसका न्यादर्श श्रीगंगानगर व हनुमानगढ़ जिले की शिक्षित कामकाजी एवं श्रमिक महिलाओं के कक्षा 11 एवं 12 के बच्चों का चुनाव इस बात को ध्यान में रखते हुए निश्चित केन्द्र तक ही सीमित करना पड़ रहा हैं। सही निष्कर्ष मिल सके इसे दृष्टिगत रखते हुए विभिन्न क्षेत्र की शिक्षित कामकाजी महिलाओं एवं श्रमिक महिलाओं को उचित प्रतिनिधित्व देने का प्रयास किया हैं। शोधकर्त्री ने समय, साधन एवं सुविधा को ध्यान में रखकर प्रस्तुत अध्ययन का निम्नानुसार सीमांकन किया हैं –

- प्रस्तुत शोधकार्य को श्रीगंगानगर एवं हनुमानगढ़ जिले तक सीमित रखा गया हैं।
- प्रस्तुत शोधकार्य में न्यादर्श को 200 बच्चों तक ही सीमित रखा गया हैं।
- प्रस्तुत शोधकार्य मे ं शिक्षित कामकाजी एवं श्रमिक महिलाओं के कक्षा 11 व 12 के बच्चों का चयन किया गया हैं।
- प्रस्तुत शोधकार्य मे ं शहरी एवं ग्रामीण क्षत्रे की महिलाओं के बच्चों का चयन किया गया हैं।

- शोध परिणाम प्राप्ति में सांख्यिकी के अन्तर्गत मध्यमान, मानक विचलन एवं टी परीक्षण तक ही सीमित रखा गया हैं।

शोध समस्या का परिभाषिकरण

शिक्षित कामकाजी महिलाएं कौन है?

'कामकाजी स्त्री': अर्थ व स्वरूप

'कामकाजी' शब्द 'कामकाज' में ई प्रत्यय लगने से बना है 'कामकाज' में दो शब्द है– काम+काज। 'काम' शब्द संस्कृत के कर्म से तथा काज शब्द संस्कृत के 'कार्य' से व्युत्पन हुआ है। इस प्रकार वस्तुतः दोनो शब्दो ं की ध्वनि एक ही है परन्तु अर्थ पर बल देने के कारण उसका प्रयोग दो बार हुआ है। वर्किंग के मूल में वर्क जिसका अर्थ बौद्धिक तथा शारीरिक क्षमताओ ं का उपयोग करके जीविकापार्जन के लिए किया जाने वाला कोई काम।''

शिक्षित कामकाजी महिलाएं

- साक्षर कामकाजी महिलाएं
- स्कूल स्तर तक शिक्षित कामकाजी महिलाएं
- महाविद्यालय स्तर तक शिक्षित कामकाजी महिलाए
- व्यवसायिक पाठ्यक्रम स्तर पर शिक्षित कामकाजी महिलाएं

श्रमिक महिलाएं कौन है?

इस वर्ग में वे महिलाएं आती है जो अनपढ़ होते हुए भी श्रम द्वारा अर्थोपार्जन करती है मूलतः ये महिलाएँ मेहनतकश होती हैं ये घर या बाहर श्रम करके अपने परिवार का पालन पोषण करती है। अशिक्षित श्रमिक महिलाओं से न्यूनतम मजदूरी पर काम कराया जाता है इसके बाद गृहस्थी का काम भी करना पड़ता है एक अनुमान के मुताबिक विश्व के कुल काम के घंटो में से महिलाएं दो तिहाई घंटे काम करती है, लेकिन वह विश्व की केवल 10 प्रतिशत आय अर्जित करती हैं।

- दैनिक वेतन भोगी श्रमिक महिलाएं
- पखवाड़ा वेतन भोगी श्रमिक महिलाएं
- मासिक वेतन भोगी श्रमिक महिलाए

बुद्धि का अर्थ, अवधारणा, प्रकृति, प्रकार, कारक, सिद्धान्त एवं परीक्षण

- **बुद्धि का अर्थ**

बुद्धि को परिभाषित करने मे ं शक्ति मनोविज्ञान के उपरान्त स्टर्न ने तथा उन्होने बुद्धि की परिभाषा देते हुए कहा– '' बुद्धि एक व्यक्ति सामान्य क्षमता है द्वारा वह चेतन पर्वूक अपने विचारों को नवीन आवश्यकताओ ं के साथ समायोजित करता है। यह नई समस्याओ ं तथा जीवन की परिस्थितियों के प्रति सामान्य मानसिक ग्रहण शीलता।''

- **बुद्धि की परिभाषा**

गाल्टन ने व्यक्त किया है–

''विभेदकारिता और चयन की शक्ति का नाम ही बुद्धि है।''

- **बुद्धि की प्रकृति**

संश्लेषण के आधार पर बुद्धि की प्रकृति के सम्बन्ध में यही कहा जा सकता है कि–

  - बुद्धि, अमूर्त है, उसका कोई भौतिक रूप न होते हुए भी उसका अपना अस्तित्व है।

- बुद्धि का विषय है – चिन्तन । चिन्तन ही सृजन क्षमता को जन्म देता है तथा सृजन क्षमता ही किसी व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र के उत्थान का मूल आधार हैं।
- सीखने की योग्यता– भारतीय मनीषियों एवं ऋषियो ं ने ज्ञान को जीवन का प्रमुख साधन एवं साध्य माना है। अतः जो व्यक्ति अधिक से अधिक ज्ञान ग्रहण कर लेता है, उसे समाज उच्च स्थान देता है। मनोवैज्ञानिको ं ने अधिक स` अधिक ज्ञान को ग्रहण करने वाली योग्यता को ही 'बुद्धि' माना हैं।

बुद्धि के प्रकार

जिस प्रकार बुद्धि की एक सर्वमान्य परिभाषा निश्चित करना संभव नहीं, ठीक उसी प्रकार यह निश्चित करना भी बड़ा कठिन है कि बुद्धि कितने प्रकार की हो सकती है? फिर भी थोर्नडाइक ने बुद्धि को निम्न तीन प्रकार की बताया है–

- अमूर्त बुद्धि
- यान्त्रिक बुद्धि
- सामाजिक बुद्धि

बुद्धि परीक्षणों के प्रकार

वर्तमान समय में उपलब्ध बुद्धि परीक्षणो ं का श्रेणी विभाजन निम्नलिखित प्रकार से कर सकते है।

- (अ) व्यक्तिगत परीक्षण
  (ब) सामूहिक परीक्षण
- (अ) शक्ति परीक्षण
  (ब) गति परीक्षण
- (अ) शाब्दिक परीक्षण
  (ब) निष्पादन परीक्षण

बुद्धिलब्धि

मनोविज्ञान में बुद्धिलब्धि का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। इसका आविष्कार प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक स्टर्न ने किया। व्यक्ति में बुद्धि की मात्रा कितनी है, इस मात्रा को बताने वाली बुद्धिलब्धि है। बालक की शारीरिक आयु एवं मानसिक आयु के आनुपातिक स्वरूप को बुद्धिलब्धि कहते है। बुद्धिलब्धि निकालने के लिए मानसिक आयु में शारीरिक आयु का भाग देते है एवं दशमलव की परेशानी से बचने के लिए 100 से गुणा कर देते हैं। उदाहरण के लिए किसी बालक की मानसिक आयु 12 वर्ष है व शारीरिक आयु 10 वर्ष है तो उसकी बुद्धिलब्धि निम्नानुसार होगी–

$$\text{बुद्धिलब्धि} \quad \frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{शारीरिक आयु}} \text{ गुणा } 100$$

शोध की परिकल्पना

परिकल्पना शब्द का अर्थ एक उपकथन से होता हैं जो समस्या के समाधान की अवधारणा होती हैं और शोधकर्ता उसकी पुष्टि करने का प्रयास करता हैं। परिकल्पना के कथन का स्वरूप एक व्याख्या के रूप में होता हैं जो अवलोकन या सिद्धान्तों पर आधारित होता हैं। जबकि सम्भावित सिद्धान्त की प्रदत्तो ं तथा प्रमाणो ं के आधार पर पुष्टि की जाती हैं तब उसे परिकल्पना की संज्ञा दी जाती हैं। परिकल्पना शोधकर्ता को त्तेजना प्रदान करती हैं। परिकल्पना की पुष्टि से शोध के निष्कर्ष निकाले जाते हैं।

शोध की परिकल्पनाएं निम्नलिखित हैः

- शिक्षित कामकाजी महिलाओं एवं श्रमिक महिलाओं के बच्चों के व्यक्तित्व का अध्ययन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।
- शिक्षित कामकाजी महिलाओं एवं श्रमिक महिलाओं के बच्चों की बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।
- शिक्षित कामकाजी महिलाओं के बच्चों की बुद्धि एवं व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।
- श्रमिक महिलाओं के बच्चों की बुद्धि एवं व्यक्तित्व के तुलनात्म्क अध्ययन में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।
- शिक्षित कामकाजी एवं श्रमिक महिलाओं के बच्चों की बुद्धि एवं व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

शोध अध्ययन की विधध उपकरण

विधि, प्रविधि, उपकरण एवं न्यादर्श किसी भी अनुसंधान कार्य के महत्वपूर्ण अंग हैं। ये सभी शोध रूपी भवन की नींव के अनुसार सुदृढ़ प्रशस्तर हैं। जिनकी अनुप स्थति में काई भी अनुसंधान करने वाला शोध रूपी भवन का निर्माण करने में सक्षम नहीं होता इसलिए प्रत्येक शोध कार्य में शोधार्थी कुछ निश्चित विधियों, प्रविधियो ं तथा उपकरणों का उपयोग करता हैं ताकि अनुसंधान के ठोस परिणाम सामने आ सके। अनुसंधान का महत्व एवं प्रभावशीलता उसके अध्ययन के निष्कर्षो के व्यावहारिक उपयोग पर अवलम्बित होता हैं। विलियम महोदय ने कहा हैं– 'शोध आकल्प आँकड़ों का एकत्रीकरण एव ं व्याख्या करने की विधि हैं जिससे शोध कार्य कम खर्च व कम समय मं पूर्ण विधि से पूरा हो जाए।''

शोध अध्ययन विधि

विधि अनुसंधान क्रिया को सम्पादित करने का एक ढ़ंग हैं जो समस्या की प्रकृति के द्वारा निर्धारित होती हैं। एम.वर्मा. के अनुसार ''विधि केवल अमूर्त प्रत्यय हैं जैसे चिन्तन में हम विषय एवं विधि को पृथक कर सकते हैं। वास्तव में ये एक क्रमिक अशेष बनाते हैं जिसमें विशेष विधि को उसी प्रकार निर्धारित करता हैं।'' जैसे उद्देश्य साधन एवं अर्न्तवस्तु को निर्धारित करता हैं तथा शुद्ध साहित्य में लेखन शैली एवं व्यवहार को निर्धारत करता हैं। शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों मे ं उत्पन्न समस्याओ ं का अध्ययन करने के लिए अनुसंधान की अनेक वैज्ञानिक एवं ठोस परिणामो ं की प्राप्ति हेतु विधि का चयन किया जाता हैं। यदि अनुसंधानकर्त्ता अपनी विधि की व्याख्या स्पष्ट रूप से नही कर सकता तो परिकल्पनाओं को अत्यधिक अनिश्चित एवं आसामान्य होने की संभावना रहती हैं। शैक्षिक अनुसंधान की अनेक विधियाँ हैं तथा प्रत्येक विधि की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका हैं। इसलिए किसी भी विधि को अन्य विधि से श्रेष्ठ नहीं कहा जा सकता। सामाजिक तथा शैक्षिक क्षत्रों में सर्वेक्षण एक समस्या से धत आँकड़ों के सकंलन का महत्वपूर्ण साधन एवं उपकरण हैं। अतः प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्त्री ने सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया हैं। क्यों ंक समस्याओं के प्रति सर्वेक्षण विधि सर्वाधिक व्यापक रूप में प्रयुक्त की जाने वाली विधियों में से एक हैं।

सर्वेक्षण विधि का अर्थ एवं परिभाषा

सर्वे शब्द की उत्पत्ति 'सर' और वीयर से हुई हैं जिसका शाब्दिक अर्थ क्रमशः 'ऊपर से'' और 'देखना' होता हैं। सामान्य सर्वेक्षण 'वर्तमान में क्या रूप हैं? इससे सम्बन्धित हैं। इसका क्षेत्र काफी विस्तृत हैं यह वर्तमान के स्वरूप की व्याख्या तथा विवेचना करना हैं वस्तुतः इसका , सम्बन्ध हैं– अभ्यास जो चालू हैं, प्रक्रियायें जो चल रही हैं, अनुभव जो किए जा रहैं हैं या नवीन दिशायें जो विकसित हो रही हैं। विद्वानों ने विभिन्न नामो ं का जैस े 'नार्मेटिव' डे ंस्क्रप्टिव' वर्णात्मक 'स्टेटस' स्तर या 'टे न्ड स' प्रचलन आदि का अनुसंधान के विवरण के लिए उपयोग किया गया हैं।

परिभाषायें

वेबस्टर शब्द कोश के अनुसारः– ''वास्तविक जानकारी प्राप्त करने के लिए किया गया आलोचनात्मक निरीक्षण ही सामाजिक सर्वेक्षण होता हैं।''

सर्वेक्षण के प्रकार

- विद्यालय सर्वेक्षण
- व्यापारी सर्वेक्षण
- सामाजिक सर्वेक्षण
- सामुदायिक सर्वेक्षण
- शैक्षिक सर्वेक्षण

सर्वेक्षण विधि के मुख्य उद्देश्य और उपयोग

अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि के उद्देश्य एवं उपयोगिता इस प्रकार हैं इसका प्रमुख उद्देश्य यह हैं कि वर्तमान में इनका क्या रूप हैं? अर्थात घटना अथवा समस्या का उल्लेख करना हैं, किन्तु बहुत से सर्वेक्षण सिर्फ वर्तमान स्थितियों के विवरण की सीमा से भी बाहर होते हैं। उदाहरण के लिए पाठयक्रमो ं का सर्वेक्षण ना केवल वर्तमान पाठयक्रम की अच्छाईयों या निर्बलताओ ं की सचू नाओ ं के बारे मे ं सहायता करती हैं अपितु परिवर्तन लाने के लिए सुझाव भी दे सकती हैं। सामान्य सर्वेक्षण अनुसंधानकर्ता का सर्वप्रथम कार्य यह हैं जिससे वह अधिक प्रबल नियन्त्रण व वस्तु परक विधि प्रयोग में ले सके। यह मानव व्यवहार से सम्बन्धित बहुमूल्य ज्ञान का सीधा साधन व स्त्रोत हैं। यह तरह–तरह के शैक्षिक कार्यक्रमां ं की योजना तैय ार करने में हमारी सहायता करता हैं। विद्यालय जनगणना कदाचित विवरणात्मक विधि की शैक्षिक योजना में सर्वाधिक उपयोगिता हैं। विद्यालय सर्वेक्षण, विद्यालय के विभिन्न पक्षों की समस्याओं के हल में मदद करता हैं।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

शोधकर्त्री का मुख्य उद्देश्य शिक्षित कामकाजी एव ं श्रमिक महिलाओ ं के बच्चों की बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोधकर्त्री ने डॉ. मोहन चन्द्र जोशी मानसिक योग्यता की संशोधित सामूहिक परीक्षा तथा डॉ. मोहन चन्द्र जोशी सामान्द्य मानससक योग्यता (बुद्धि) का प्रयोग किया गया चयनित कक्षा 11 व कक्षा 12 के शिक्षित कामकाजी एव ं श्रमिक महिलाओ ं से मापनी भरवाने के पश्चात प्राप्त परिणामों का तुलनात्मक अध्ययन ज्ञात करके मापनी को वैध बनाया जा सके।

उपकरण निर्माण

एक अच्छे प्रश्न पत्र की विशेषता रहती हैं कि प्रश्न उद्देश्य निष्ठ एवं स्पष्ट हो। मापनी का व्यावहारिक, विश्वनीय एवं वैद्य होना अति आवश्यक हैं। शोधकर्त्री ने डॉ० मोहन चन्द्र जोशी योग्यता की संशोधित सामूहिक परीक्षा का प्रयोग किया है।

उपकरणों का मानकीकरण

उपकरणों की वैद्यता परीक्षण शोधकर्त्री ने कक्षा 11 एवं 12 के 100 विद्यार्थियों पर मानसिक योग्यता की संशोधित सामूहिक परीक्षा के प्रश्नों का परीक्षण किया तथा साथ ही कक्षा 11 एव ं 12 के विद्यार्थियो ं पर क्पउमदपे वदंस च्मतेवदंसपजल प्दअमदजवतल के प्रश्नों का परीक्षण किया।

❖◆❖